Sl. No. of Q.P : 5037

Unique Paper Code : 62054408_OC
Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein
Name of the course : B.A. (P) Hindi
Semester : IV
Time : 03 Hrs
Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश
1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'शिवशंभु के चिटठे बनाम लार्ड कर्जन में निहित व्यंग पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' का सारांश लिखिए। (12)

2. 'भक्तिन' के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख कीजिए ।
अथवा
'अदम्य जीवन' रिपोतार्ज के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (12)

3. 'शायद' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए ।
अथवा
वैष्णव जन के माध्यम से विष्णु प्रभाकर क्या कहना चाहते हैं ? स्पष्ट करें। (12)

4. 'उखड़े खम्भे' के माध्यम से हरिशंकर परसाई ने किस वर्ग पर करारा व्यंग किया है ? पर प्रकाश डालिए।
अथवा
लक्खा बुआ की चारित्रिक विशेषताएं बताइए । (12)

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (7x2=14)

(क) चीज़ वह बनाना चाहिए जिसका कुछ देर कायम हो। नाता पिता की याद आते ही बालक शिवशंभु का सुख स्वप्न भंग हो गया। दरबार समाप्त होते ही वह दरबार भवन , वह एम्फीथियेटर तोड़कर रख देने की वस्तु हो गया। उधर बनाना , इधर उखाड़ना पड़ा। नुमाइशी चीजों का यही परिणाम है।उनका तितलियों का सा जीवन होता है। माई लार्ड ! आपने कछाड़ के चाय वाले साहबों की दावत खाकर कहा था कि वह लोग यहाँ नित्य हैं और हम लोग कुछ दिन के लिए।

(ख) परन्तु मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ लिखा जाए, वह सब का सब साहित्य है। साहित्य उसी रचना को कहेंगे , जिसमें कोई सचाई प्रकट की गयी हो , जिसकी भाषा प्रौढ़ , परिमार्जित और सुन्दर हो , और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप मैं उसी अवस्था मैं उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सचाइयों और अनुभूतियाँ व्यक्त की गयी हों।

(ग) जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की उपेक्षा दुःख ही अधिक है। जब उसने गेहुएँ रंग और बटिया जैसे मुखवाली पहली कन्या के संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओंठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था , क्योंकि सास तीन तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशुण्डि-जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं।

(घ) छोटी-छोटी पगडंडियों से होता हुआ यह स्वर कब्रों से टकराकर गूंज उठा और मानो कब्रों से आवाजें आने लगीं। चौदह कब्रे-आँखों के सामने एकबारगी उनमें सोये कंकाल तड़प उठे और नाच उठे यातना से व्याकुल भूख से तड़प-तड़पकर मरते हुए प्राणियों के चित्र। राह में एक वृद्ध अपनी चटाई पर बैठा करघा चला रहा था। हम लोग उसी के पास जाकर रुक गए। वृद्ध ने हमारी और दृष्टि उठाई। भट्टाचार्यजी ने कहा - 'दादा, आगरे से आये हैं यह , यहाँ का हाल देखने। '

6. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (7+6 =13)

(क) बापू अपने सिरजनहार के प्रति सच्चे रहे। अंतिम क्षण में भी जब हत्यारे की गोली उनके वक्ष के पार हो रही थी, तब भी उनके मुख से निकला 'हे राम ' अर्थात हे मेरे सिरजनहार , में तो तेरी ही शरण में हूँ। तू जैसे चाहे रख। चरम आत्म संयम और अनुद्विग्नता के मामले में सुकरात के बाद संसार में शायद बापू के समान और कोई नहीं पैदा हुआ। उनकी अजेय स्थिरता और अविचलता को देखकर यह अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि हत्यारे ने उन्हें गोली क्यों मारी थी। ।

अथवा

पुरुष : ... कोई चीज होल्ड नहीं करती। लगता है , कुछ होना था , नहीं हुआ। शायद कल होगा। पर वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।
स्त्री : कल तो होता है। .. पर बात समझ में नहीं आती। कल तो अब आने वाला है। सो कर उठने तक आ जाएगा।
पुरुष : (उसाँस के साथ) यह तो दिक्कत है डार्लिंग , यही तो दिक्कत है। ... फाइलें पलट लो , चाय पि लो , बहस कर लो , किसी के ब्याह-शादी या मातम में चले जाओ , कोई पार्टी अटेंड कर लो ...

(ख) कुछ साथियों के हवाले से पता चला कि कुछ साइटें बैन हो गयी हैं। पता नहीं यह कितना सच है लेकिन लोगों ने सर्कार को कोसना शुरू कर दिया। अरे, भाई , सरकार तो जो देश हित में ठीक लगेगा वही करेंगी न ! पता नहीं मेरी इस बात से आप कितना सहमत हैं लेकिन यह है सही बात कि सर्कार हमेशा देश हित के लिए सोचती है। में शायद ठीक से अपनी बात न समझा सकूँ लेकिन मेरे पसंदीदा लेखक, व्यंगकार हरिशंकर परसाई ने इसे अपने एक लेख उखड़े खम्भे में बखूबी बताया है।

अथवा

राम ने सीता को बनोबास दे दिया। लच्छन, भरत , शत्रुघन , हनुमान, रानी कौंसिल्ला रोवैं। चिरई चिरगुन रोवैं। हुआँ लव-कुस भए। वाल्मीकि ने सिखाया-पढ़ाया। सीता मैय्या ने लड़कों को समझाया-चारों दिशाओं में जाना, अवधपुरी न जाना। लेकिन भाग का लेखा कोण मिटावै। लव-कुस ने लड़ाई में हनुमान, भरत , लच्छमन सबको जीत लिया. आखिर में राजा राम आए। तब सीता मय्या अनरथ जान कर दौड़ी -दौड़ी आई। खुशी भी थी कि लड़कों ने बाप के भाइयों को हरा दिया।